अफ़सर साहब की नींद खुली ही थी कि एक हब्शी दौड़ा हुआ आया और बोला-साहब , वह तो फिर रो रहा है । अफ़सर ने ध्यान से सुना , हाँ , यह तो वही रोने को आवाज है ।

लोगों ने झटपट कपड़े पहिने और बन्दूकें लेकर रवाना हो गये । उस जगह पहुँचकर ये लोग झाड़ियों की आड़ से दोनों बनमानुसों की अन्तिम प्रेम - लीला का तमाशा देखने लगे - - देखा कि वह अपने जोड़े की लाश को अपने खून से रंगी हुई छाती से दबाकर रो रहा है । उसकी आंखों में नशा - सा छाया हुआ मालुम होता था , जैसे कोई शराब के नशे में चूर हो । यह दर्दनाक माजरा देखकर शिकारियों की आंखें भी आंसू से तर हो गईं । यह तो मालूम ही था कि वह अब चोट नहीं कर सकता । शिकारी ने ऐसा ही किया । एक गोली से उसका काम तमाम कर दिया।